ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-I* Issue-VI* September-2016
Anthology : The Research

एक कुशल उपदेशक एवं प्रशासक के रूप में वील्होजी

अनिल बाई
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक

सारांश

'वील्होजी एक कुशल उपदेशक एवं प्रशासक बनकर जाम्भाणी बिश्नोई पंथ में अपनी लौकिक एवं आध्यात्मिक शक्ति शस्त्र एवं शास्त्र के नियमों से अलग हुए जीवों को नियम की ओर चलाने के लिए प्रयत्नशील हुए थे। ऐसी मान्यता है कि वील्होजी पूर्व जन्म में एक कुशल प्रशासक थे। वे इस जन्म में भी आध्यात्मिक ज्ञान वेता, नियमों के संवाहक तथा प्रेरणा स्रोत बनकर विशेष रूप से गुरू जाम्भोजी की बताई हुए मर्यादा के संवाहक बनकर जन समुदाय में उभरे थे। वील्होजी ने स्वयं लेखक कार्य प्रारम्भ किया और अपने शिष्यों सुरजन जी, केशोजी को भी आशीर्वाद दिया जिससे ये दोनों भी अपने पूज्य गुरू की तरह महान कवि, लेखक एवं समाज उद्वारक हुए।''[1]

वील्होजी का जन्म रेवाड़ी में 1532 ई. में एक खाती (सुथार) परिवार में हुआ था। वील्होजी की जन्मभूमि रेवाड़ी थी लेकिन कर्मभूमि राजस्थान बनी। बचपन में ही वे राजस्थान चले गए थे और राजस्थान को ही उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। वहां पर रहकर ही उन्होंने अनेक रचनाओं की रचना की। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया। उन्होंने लोगों को धर्माचरण पर दृढ़ रहने का संदेश दिया। जीवो की रक्षा, वृक्षों की रक्षा करने की लोगों को प्रेरणा दी, पानी को छानकर पीना बताया, उंच–नीच और जाति–पाति के भेद से दूर रहने, जीव हिंसा न करना, नशे–पते छोड़ना आदि पर विशेष प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्द : कुशल उपदेशक एवं प्रशासक, अध्यात्मिक ज्ञान वेता, नियमों के संवाहक, प्रेरणा स्रोत, समाज उद्वारक।

प्रस्तावना

वील्होजी ने साहित्य निर्माण का कार्य तो किया ही उसके साथ ही अनेक सामाजिक कार्य भी किये। उन्होंने जाम्भोलाव पर वि.स. 1648 में दो मेले प्रारम्भ किये। प्रथम चैत्र बदी 11 से अमावस्या तक 'चैत्री मेला' और दूसरा भादवा की पूर्णिमा को माधी मेला। मुकाम में आसोज बदी अमावस्या का मेला (वि.स. 164) वील्होजी ने ही प्रारंभ किया था .....।''[2]

वील्होजी ने गुरू के महत्त्व का भी वर्णन किया है–

सिवरूं सतगुरू सुख दातार, दुख भंजण तेतीसां तार।
सुर नर गंद्रफ जैह की आस, जंबू दीप कीयो परगास।।''[3]

अर्थात मैं उन परम दातार, सतगुरू जाम्भोजी महाराज का स्मरण करता हूं जो तेतीस कोटि देवताओं के दुखों को हरने वाला है। देवता, मनुष्य, गन्धर्व भी जिनकी आशा करते हैं, उन्होनें जम्बद्वीप में ही अवतार लिया है।

वील्होजी के अलावा कबीर तथा अन्य संतों ने भी गुरू के महत्त्व को स्वीकार किया है। कबीर दास ने तो गुरू को गोविन्द से भी अधिक महत्त्व दिया है।

गुरू गोविन्द दोउ खड़े, काकै लागूं पाय।
बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविन्द दियौ मिलाय।।''[4]

वील्होजी ने मनुष्य के साथ–साथ जीव–जन्तुओं के महत्व को भी स्वीकार किया है। उनका मानना है कि संसार में अनेक धर्म हैं लेकिन जीवों पर दया के बिना सब व्यर्थ है। दया का नाम तो सभी लोग जान लेते हैं लेकिन दया का भेद तो कोई बिरला ही जानता है। उनका कहना है कि मनुष्य को चाहिए कि उसे जीवों को सताना नहीं चाहिए बल्कि जीवों की रक्षा करनी चाहिए। जीवों को भी भगवान ने ही इस धरती पर पैदा किया है हमारी तरह। इसलिए हमारी तरह जीवों को भी जीने का अधिकार है।

वील्होजी ने पापियों का भी विरोध किया है। उन्होनें पाप के तीन प्रकार माने है– मन से, वचन से और कर्म से। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल भोगता है। उनका कहना है –बुरे काम का मन से चिन्तन करना, कहकर किसी दूसरें की हत्या करवाना और स्वयं किसी की हत्या करना आदि तीनों रूपों में ही

यह सब पाप ही कहलाता है। इस प्रकार के पाप करने वाला भी नरक का ही अधिकारी होता है। अर्थात उसका भी नरक में ही वास होता है।

वील्होजी ने जीव जन्तुओं की रक्षा के लिए कहा है–

अणछांण्यो पांणी बावरै, अवही अनंत करै।
अभरव भखयो व बुध्यनास, मुव पछै दोर मां वास।।''[5]

अर्थात बिना छाने हुए जल का प्रयोग करने से अनेक जीवों की हत्या होती है। इस पाप का कोई अन्त नहीं है। जो मनुष्य अपना उत्तम खाद्य पदार्थ छोड़कर मांस का भक्षण करता है, उसकी बुद्धि नष्ट होती है। वह मरने पर नरक में जाता है।

वील्होजी के अनुसार वद्ध अवस्था में विवाह करना, अपाहिज जीवों पर अत्याचार करना और वृक्षों को काटना आदि भी पाप की ही श्रेणी में आते हैं। उनका कहना है कि हे प्राणियों! तुम पाप बुद्धि को त्यागों और अपने मन को धर्म के कामों में लगाओ। अपने इस मन को इधर–उधर मत भटकने दो। अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखो। दूसरों की निन्दा मत करो। मांस का भक्षण मत करो। नही तो तुम सब भी पाप के भागी बनोगे। तुम सब को भी नकर का सामना करना पड़ेगा। या ये कहें कि नरक में जाना पड़ेगा। वहां पर यम के दूत मनुष्य के कर्मों के अनुसार उन्हें कठिन से कठिन कष्ट देते हैं और वो सब मनुष्य को सहन करना पड़ता है।

वील्होजी माया के स्वरूप को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। वे मनुष्य को समझाते हुए कहते हैं कि मनुष्य तू माया के जाल में मत फंसना। यह बहुत चालाक है। तुझे अपने जाल में फंसा लेगी। कबीरदास ने भी माया को महाठगिनी बताते हुए कहा है–

''माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फांस लिये कर डोलै, बोले मधुरी बानी।।''[6]

अर्थात माया महा ठगनी है। वह ससांर को ठगती रही है। यदि मनुष्य माया को छोड़ने का प्रयास करें तो भी छोड़ी नहीं जा सकती। क्योंकि माया मनुष्य को फिर से अपने में लीन कर लेती है। वह संसार के प्राणियों को अपने मधुर जाल में फंसा लेती है। इसलिए उससे बच पाना बहुत कठित है।

वील्होजी ने उन लोगों को फटकार लगाई है जो लोग अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए झूठ बोलकर दूसरों से अपना काम निकालवाते हैं, जीवों को सताते हैं, गुरू की आज्ञा का पालन नहीं करते, पराई स्त्री से मन लगाते हैं, लोभ से वशीभूती होकर चोरी करते हैं, दो स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं। उनका मानना है कि ऐसे लोगों को चाहिए कि वे अपने आपको सुधारे और सत्कर्म करें। अन्यथा यमराज द्वारा दिये जाने वाले कष्टों को सहन करने के लिए तैयार रहे। सत्कर्म ही उनको यमराज द्वारा दिए जाने वाले कष्टों से मुक्ति दिला सकते हैं।

वील्होजी के समय में धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड पाखण्ड तथा अंधविश्वास आदि फल फूल रहे थे। बिना सोचे समझे लोग भूत–प्रेतों की सेवा करने में लगे हुये थे, काठ, पत्थर आदि की पूजा में लगे हुए थे। उनके अंधश्विासों पर प्रहार करते हुए वील्होजी कहते हैं कि हे प्राणियों तुमने इन बुरे कर्मकाण्डों में पड़ कर बुरे कर्मों की गठरी बांध ली है। इन कर्मों का दुःख तुम्हें सहन करना ही पड़ेगा।

वील्होजी ने मनुष्य की सोई हुई आत्मा को जगाने की कोशिश करते हुए कहा है कि हे प्राणी! अपनी इस पाप बुद्वि को त्यागो और धर्म के कार्यों में मन लगाओ। माया में मन मत लगाओ। यह संसार एक मेले की तरह है। लोग आते हैं और चले जाते हैं। माता–पिता, बहन–भाई, सगे–सम्बन्धि और साथी सभी यहीं पर रह जाते हैं। कोई भी किसी के साथ नहीं जाता है–

''जीव र पिंड बिछोड़ो होय, खिण एक धीर धरै न कोई।
माय न बाप बैहण न वीर, संगपण साथि नहीं को सीर।।''[7]

वील्होजी मनुष्य को समझाते हुए कहते है कि जो मूर्ख है, अज्ञानी है तथा साधुओं की संगति से प्रेम नहीं करते हैं, झुककर प्रणाम नहीं करते हैं और भांग पोस्त पीते हैं, विष्णु का जाप नहीं जपते हैं, वे मजाक चुगली करते हैं, झूठ से प्रेम करते हैं, पापों में विश्वास करते हैं, धर्म के मार्ग पर नहीं चलते, नशे की बुरी आदत के शिकार हैं। ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए। क्योंकि वे सब निगुरे हैं। वे मनुष्य को सही रास्ता बताने की बजाय उसे उसके रास्ते से भटकाते हैं। ऐसे दुष्ट कुकर्म करवाते हैं। इसलिए ऐसे अन्यायी लोगों का भरोसा नहीं करना चाहिए।

उद्देश्य

हमारे देश भारत की भूमि संतों की भूमि रही है। देश के हर क्षेत्र में संतों की महिमा का गुणगान किया जाता रहा है। समय–समय पर संतों ने मनुष्य को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। मनुष्य को सही मार्ग दिखाने में संतों का बहुत बडा योगदान रहा है। भारतीय संतों में वील्होजी का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होनें लोगों को समाज में फैली अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयों से अवगत करवाया। उन्होनें मनुष्य की सोई हुई आत्मा को जगाने की कोशिश करते हुए इन बुराइयों से दूर रहने के लिए ही नहीं कहा बल्कि इसके साथ–साथ मनुष्य की इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने का मार्ग भी दिखाया है। उनके इस अपार सहयोग का वर्णन करना ही मेरे इस लेख का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि वील्होजी अपने युग के एक कुशल उपदेशक एवं प्रशासक थे। धर्म साहित्य, सभ्यता तथा संस्कृति आदि के परिष्कार में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा। वे ऐसे साहित्यकार थे जिसने जन–साधारण को अपने साहित्य के माध्यम से सर्वाधित महत्व प्रदान किया। उन्होनें गुरू के महत्त्व का वर्णन करते हुए कहा है। गुरू ही हमें हमारे पापों से छुटकारा दिलाकर गोविन्द से मिला सकता है। इसलिए हमें गुरू की आज्ञा का पालन करना चाहिए। उन्होनें भारतीय समाज की भी खबर ली जो धार्मिक आडम्बरों, पाखण्डों, जातिय भेदभाव के दलदल में फंसा हुआ था। उन्होनें मनुष्यों को माया के प्रति सावधान रहने की चेतावनी देते हुए कहा कि माया से सावधान रहना चाहिए।

वील्होजी के अनुसार पानी को छानकर पीना चाहिए, जीवों को नहीं सताना चाहिए, मांस का भक्षण नहीं करना चाहिए, पराई स्त्री से, पराए धन से मन नहीं लगाना चाहिए, नशा नहीं करना चाहिए, झूठ नहीं बोलनी चाहिए। अंत में वील्होजी मनुष्य को समझाते हुए कहते हैं कि हे मनुष्य! तू पाप बुद्वि को त्यागकर धर्म के कार्यो में अपने मन को लगा। गुरू की आज्ञा का पालन कर। विष्णु भगवान का स्मरण कर। वही तुम्हें इस संसार रूपी भवसागर से पार उतारेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कृष्णलाल बिश्नाई, वील्होजी की वाणी, जाम्भाणी साहित्य अकादमी सैक्टर–1 ई. 134,जयनारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर (राजस्थान) सं. तृतीय, 2016, पृ. 5*
2. *वहीं, पृ. 33*
3. *वहीं, पृ. 44*
4. *डा. प्रणव शर्मा, प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य (अ), प्रकाशक–विकास, प्रा.लि., ई–28, सैक्टर–8, (नोएडा), सं. 2012, पृ. 172*
5. *कृष्ण लाल बिश्नोई वील्होजी की वाणी, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, सैक्टर–1–ई, 134, जयनारायण व्यास कालोनी बीकानेर (राजस्थान) सं. तृतीय 2016, पृ. 45*
6. *डा. प्रणव शर्मा प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य (अ), प्रकाशक विकास, प्रा.लि., ई–28, सैक्टर–8, (नोएडा) सं. 2012, पृ. 195*
7. *कृष्ण लाल बिश्नोई वील्होजी की वाणी, जम्भाणी साहित्य अकादमी सैक्टर–1, ई–134, जयनारायण व्यास कालोनी, बीकानेर, (राजस्थान) सं. तृतीय, 2016, पृ. 48।*